द्रव्यगुण विज्ञान – 1

कतिपय द्रव्यों की कार्मुकता का अध्ययन श्वेत प्रदर के परिप्रेक्ष्य में

अध्येता : डा. बीना सोलंकी

निर्देशक : डा. रामपाल शास्त्री

वर्ष : 1991

श्वेत प्रदर स्त्री बहुल रोग है, जिससे पीड़ित स्त्री अत्यन्त दुर्बल हो जाती है । अतः इस रोग के निवारणार्थ एक विशिष्ट औषध की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए कतिपय द्रव्यों का चयन इस अध्ययन हेतु किया गया है ।

इस अध्ययन हेतु 30 आतुरों का चयन किया गया । औषध योग के रूप में अशोक त्वक्, नागरमोथा मूल, रसोंत घन, धातकी पुष्प और बिल्व मज्जा को समान मात्रा में लेकर रस क्रिया विधि से घन वटी का निर्माण कर आतुरों को 2–2 वटी (525 मि.ग्रा. प्रति वटी) दिन में दो बार तण्डुलोदक से 45 दिन तक दी गई ।

इस अध्ययन में 60 प्रतिशत आतुरों को पूर्ण लाभ तथा 40 प्रतिशत आतुरों को सामान्य लाभ प्राप्त हुआ ।

द्रव्यगुण विज्ञान – 2

कतिपय द्रव्यों के तमक श्वासहर प्रभाव का अध्ययन

अध्येता : डा. सीताराम शर्मा

निर्देशक : डा. रामपाल शास्त्री

वर्ष : 1991

आज के भौतिक युग में एक तरफ जहाँ मनुष्य आहार विहार के प्रति सजग नहीं है वहीं दूसरी ओर पर्यावरण प्रदूषण जैसी विकट समस्या के कारण मनुष्य का श्वास लेना भी कठिन होता जा रहा है । अतः इस जटिल व्याधि तमक श्वास पर कतिपय द्रव्यों के प्रभाव का अध्ययन ही महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

इस अध्ययन हेतु 20 आतुरों का चयन किया गया । औषध योग के रूप में वासा, भारंगी एवं कर्कट श्रृंगी प्रत्येक द्रव्य को समान मात्रा में लेकर गुटिका, शर्करा तथा धूमक योग का निर्माण किया गया । प्रत्येक रोगी को तीनों योग दिए गए । इस अध्ययन में प्रयुक्त योग श्वास कल्याणी गुटिका 2–4 गोली की मात्रा में दिन में तीन बार गर्म जल के साथ दी गई । श्वास कल्याणी शर्करा 15–30 मि.लि. दिन में दो बार मधु के साथ दी गई । श्वास कल्याणी धूमक 5–5 ग्राम दिन में तीन बार रोगियों को वेगानुसार दिया गया । तीनों औषध योगों का आतुरों पर एक माह की अवधि तक प्रयोग किया गया ।

इस अध्ययन में 25 प्रतिशत आतुरों में उत्तम लाभ, 45 प्रतिशत आतुरों में मध्यम लाभ तथा 20 प्रतिशत आतुरों में न्यून लाभ रहा ।

द्रव्यगुण विज्ञान – 3

कतिपय श्वित्रघ्न द्रव्यों का गुणकर्मात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. अजीत कुमार सिंह

निर्देशक : वैद्य बनवारी लाल गौड़

वर्ष : 1992

वर्तमान में मनुष्य की अनुचित दिनचर्या, ऋतुचर्या, आहार – विहार आदि अनेक कारणों से श्वित्र के रोगियों में दिन – प्रतिदिन वृद्धि हो रही है। आयुर्वेद में श्वित्र रोगियों पर की जाने वाली चिकित्सा के क्रम में शास्त्रों में वर्णित ऐसे द्रव्यों का इस अध्ययन हेतु चयन किया गया है ।

इस अध्ययन हेतु 25 आतुरों का चयन किया गया। औषध योग के रूप में खदिर सार और शिलाजतु को वटी रूप में तथा वायविडंग, काकोदुम्बर को चूर्ण रूप में प्रयोग किया गया । खदिर सार वटी 500 मि.ग्रा. तथा शिलाजतु वटी 700 मि.ग्रा. की बनाई गई । बाल रोगी में खदिर सार की एक वटी एवं शिलाजतु की 1/2 वटी दिन में दो बार तथा वायविडंग चूर्ण एवं काकोदुम्बर चूर्ण 2–2 ग्राम की मात्रा में दिन में दो बार दिया गया । युवा रोगी में खदिर सार एवं शिलाजतु की 2–2 वटी सुबह–शाम तथा वायविडंग चूर्ण एवं काकोदुम्बर चूर्ण 5–5 ग्राम की मात्रा में सुबह–शाम दिए गए। खदिर सार वटी एवं शिलाजतु वटी को गोदुग्ध के अनुपान से तथा वायविडंग चूर्ण एवं काकोदुम्बर चूर्ण को उष्णोदक के अनुपान से दिया गया । इन औषध योगों का प्रयोग 90 दिन तक किया गया ।

25 आतुरों में से 10 आतुरों में पूर्ण लाभ, 4 आतुरों में मध्यम लाभ, 8 आतुरों में आंशिक लाभ तथा 3 आतुरों में लाभ नही हुआ ।

द्रव्यगुण विज्ञान – 4

कतिपय वर्ण्य द्रव्यों का गुणकर्मात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. राज नारायण शर्मा

निर्देशक : वैद्य बनवारी लाल गौड़

सह–निर्देशक : डा. महेन्द्र कुमार शर्मा

वर्ष : 1992

आज के वैज्ञानिक एवं सौन्दर्य प्रसाधन युग में वैवर्ण्य एक ज्वलन्त समस्या है । आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान में वर्ण्य द्रव्यों का प्रयोग व्यङ्ग., न्यच्छ आदि वर्ण विकार के उपचारार्थ एवं प्राकृत त्वचा में वर्ण प्रसादन हेतु वर्णित है । अतः अनुसंधान परम्परा के प्रवाह में से कतिपय द्रव्यों का चयन इस शोध कार्य हेतु किया गया है ।

इस अध्ययन हेतु 50 रोगियों का चयन किया गया तथा उन्हें तीन वर्गों में विभाजित किया गया । वर्ग 'क' में कृष्ण–श्याम व श्यामावदात वर्ण वाले प्राकृत त्वचा वाले रोगियों को रखा गया । वर्ग 'ख' में व्यङ्ग.ादि वर्ण विकार वाले रोगियों को रखा गया । वर्ग 'ग' के अन्तर्गत 5 वर्ण प्रसादन और 5 वर्ण विकार के उपशमनार्थ रोगियों को रखा गया । औषध योग के रूप में चन्दनादि चूर्ण (घटक – श्वेत चन्दन, मंजिष्ठा, हरिद्रा तथा कुंकुंम) का प्रयोग किया गया । औषध योग को बाह्य प्रयोगार्थ 5–7 ग्राम मात्रा में प्रातः काल एक बार और आभ्यन्तर प्रयोगार्थ 3 ग्राम मात्रा में प्रातः, सायं दो बार जल के अनुपान से दिया गया । औषध प्रयोग की अवधि 45 दिन रखी गई ।

निष्कर्ष के रूप में वर्ग 'क' के 20 रोगियों में कुल औसत लाभ 81.76 प्रतिशत, वर्ग 'ख' के 20 रोगियों में कुल औसत लाभ 49.16 प्रतिशत तथा तृतीय वर्ग 'ग' के 10 रोगियों में कुल औसत लाभ 6.65 प्रतिशत रहा ।

द्रव्यगुण विज्ञान – 5

अश्वगन्धा एवं बला का कुपोषणजन्य विकारों पर गुणकर्मात्मक अध्ययन बालशोष के परिप्रेक्ष्य में

अध्येता : डा. संजय राधो बाजी तलमले

निर्देशक : वैद्य बनवारी लाल गौड़

वर्ष : 1992

आर्थिक रूप से समृद्ध न होने के कारण हमारे देश में लाखों बच्चे अपूर्ण पोषण के फलस्वरूप कुपोषण जन्य व्याधियों से ग्रसित हैं । विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O) एवं यूनिसेफ आर्थिक रूप से पिछड़े देशों में इस प्रकार के बच्चों के लिए अथक प्रयास कर रही है । अतः भारत में भी एक सस्ती, सर्वसुलभ, बल्य एवं पौष्टिक चिकित्सा उपलब्ध कराने हेतु शोष एवं कार्श्य में प्रशस्ति प्राप्त अश्वगंधा एवं बला का चयन इस अध्ययन हेतु किया गया है।

इस अध्ययन में 40 आतुरों का चयन कर उन्हें 20–20 के दो वर्गों में विभाजित किया गया। औषध योग के रूप में अश्वगंधा मूल तथा बला बीज को जल, मिश्री एवं घृत मिलाकर पृथक्–पृथक् ग्रैन्यूल्स तैयार किए गए । इस औषध को 1–2 वर्ष की आयु के बच्चों में 5 ग्राम मात्रा में दिन में तीन बार, 2–5 वर्ष की आयु के बच्चों में 10 ग्राम मात्रा में दिन में तीन बार, 5 वर्ष से अधिक की आयु में 15 ग्राम मात्रा में दिन में तीन बार दिया गया । इस औषध योग को दुग्ध के अनुपान के साथ, 2 माह तक आतुरों में प्रयोग कराया गया ।

अश्वगंधा द्वारा चिकित्सा किए गए वर्ग के 20 आतुरों में से 14 आतुरों को उत्तम लाभ, 4 आतुरों को मध्यम लाभ तथा 1 आतुर को अल्प लाभ रहा ।

बला से चिकित्सा किए गए वर्ग के 20 आतुरों में से 12 आतुरों में उत्तम लाभ, 6 आतुरों में मध्यम लाभ तथा 1 आतुर में अल्प लाभ रहा ।

द्रव्यगुण विज्ञान – 6

पाण्डुर असृग्दर (श्वेत प्रदर) पर उदुम्बर का गुणकर्मात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. शन्नो गुप्ता

निर्देशक : डा. रामपाल शास्त्री

वर्ष : 1994

श्वेत प्रदर जैसे बहुव्याप्त एवं कृच्छ्रसाध्य रोग हेतु आशुप्रभावकारी एवं सर्वसुलभ औषध उपलब्ध कराने हेतु उदुम्बर का गुणकर्मात्मक अध्ययन ही इस महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

इस अध्ययन हेतु 60 आतुरों के 5 वर्ग बनाए गए तथा प्रत्येक वर्ग में 12 आतुरों को रखा गया । औषध योग के रूप में उदुम्बर घनवटी का 2 ग्राम मात्रा में समोष्ण जल अनुपान से आभ्यन्तर प्रयोग तथा उदुम्बर घन विलयन एवं पंचवल्कल क्वाथ की 200–200 मि.लि. मात्रा में उत्तर बस्ति दी गई । प्रयोग अवधि 15 दिन रखी गई।

जिन आतुरों को उदुम्बर घन वटी का आभ्यन्तर प्रयोग कराया गया उनमें 47.98 प्रतिशत लाभ रहा । जिन आतुरों को उदुम्बर घन विलयन की उत्तर बस्ति दी गई उनमें 55.09 प्रतिशत लाभ रहा । जिन आतुरों को उदुम्बर घन वटी का आभ्यन्तर प्रयोग व उदुम्बर घन विलयन की उत्तर बस्ति दोनों का प्रयोग कराया गया उनमें 63. 72 प्रतिशत लाभ रहा । जिन आतुरों को पंचवल्कल क्वाथ की उत्तर बस्ति दी गई उनमें 55.55 प्रतिशत लाभ रहा तथा जिन आतुरों को समोष्ण जल की उत्तर बस्ति दी गई उनमें 5 प्रतिशत लाभ रहा।

द्रव्यगुण विज्ञान – 7

चन्द्रशूर का गुणकर्मात्मक अध्ययन आमातिसार के परिप्रेक्ष्य में

अध्येता : डा. जयकुमार सिंह

निर्देशक : डा. रामपाल शास्त्री

वर्ष : 1994

आमातिसार पाचन संस्थान गत कृच्छ्रसाध्य व्याधि है जिसमें द्रव्यगुण एवं मूलभूत सिद्धान्तों के परिप्रेक्ष्य में चन्द्रशूर क्रियाशील प्रतीत हुआ है । अतः इसे वैज्ञानिक कसौटी पर रखकर चन्द्रशूर का आमातिसार के परिप्रेक्ष्य में गुणकर्मात्मक अध्ययन करना ही इस महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

इस अध्ययन हेतु 32 आतुरों का चयन किया गया । औषधि रूप में चन्द्रशूर चूर्ण 4–4 ग्राम की मात्रा में प्रातः, मध्यान्ह एवं सायंकाल दिया गया । साधारण जल एवं पिप्पली का अनुपान रूप में प्रयोग किया गया । औषधि प्रयोग अवधि 15 दिन रखी गई ।

32 आतुरों में से 20 आतुरों को (62.50 प्रतिशत) पूर्ण लाभ, 6 आतुरों को (18.75 प्रतिशत) सामान्य लाभ तथा 6 आतुरों को (18.75 प्रतिशत) अलाभ रहा ।

द्रव्यगुण विज्ञान – 8

कतिपय द्रव्यों का खालित्य रोग के परिप्रेक्ष्य में गुणकर्मात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. कृष्ण कुमार शर्मा

निर्देशक : वैद्य रामावतार शास्त्री

सह–निर्देशक : डा. महेन्द्र कुमार शर्मा

वर्ष : 1995

आधुनिक सौन्दर्य प्रसाधन युग में केश विकास हेतु सौन्दर्य प्रसाधन केन्द्रों द्वारा कई द्रव्यों का प्रयोग किया जा रहा है । जहाँ ये द्रव्य एक ओर अस्थाई लाभ करते हैं, वहीं कई द्रव्य उपद्रव भी करते हैं । अतः इस ज्वलंत समस्या के निवारण हेतु कतिपय द्रव्यों का गुणकर्मात्मक अध्ययन करना इस महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

इस अध्ययन हेतु 20 आतुरों का चयन किया गया । औषध रूप में मनःशिलादि लेप (घटक–मनःशिला, तुत्थ एवं काशीस) का प्रयोग किया गया । औषध प्रयोग अवधि 5 सप्ताह रखी गई।

पाँच सप्ताह की पूर्ण चिकित्सा के पश्चात् निष्कर्ष निम्न प्रकार रहा – चिकित्सा काल में सूक्ष्म पीडिकाएं 100 प्रतिशत रोगियों में उत्पन्न हुई तथा श्वेत रोमोत्पत्ति भी 100 प्रतिशत रोगियों में हुई, किन्तु पूर्ण केश वृद्धि 25 प्रतिशत रोगियों (5 रोगियों) में तथा अल्प केश वृद्धि 15 प्रतिशत रोगियों (3 रोगियों) में हुई, शेष 60 प्रतिशत रोगियों (12 रोगियों) में केशोत्पत्ति नही हुई ।

द्रव्यगुण विज्ञान – 9

गुडूची का पाण्डु रोग के परिप्रेक्ष्य में गुणकर्मात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. रामरतन मीणा

निर्देशक : वैद्य रामावतार शास्त्री

सह–निर्देशक : डा. नरेश खेमानी

वर्ष : 1995

वर्तमान युग में व्यक्ति भौतिक संसाधनों के वशीभूत होकर संतुलित आहार–विहार का पालन नहीं कर पाता है, फलतः धातुनिर्माण प्रक्रिया में विसंगतियाँ उत्पन्न होकर कई व्याधियाँ उत्पन्न हो जाती हैं, यथा–पाण्डु, कामला आदि । अतः पाण्डु रोग चिकित्सार्थ दीपन, पाचन, रसायन एवं त्रिदोषशामक द्रव्य गुडूची का अध्ययन हेतु चयन किया गया है।

इस अध्ययन हेतु 25 आतुरों का चयन किया गया । औषधि के रूप में गुडूची सत्व 1 ग्राम मात्रा में दिन में 2 बार साधारण जल के अनुपान से 30 दिन तक सेवन कराया गया ।

आतुरों में चिकित्सोपरान्त पाण्डु रोग के लक्षणों में 44 प्रतिशत औसत लाभ (मध्यम लाभ) रहा तथा हीमोग्लोबिन में 44 प्रतिशत वृद्धि हुई ।

द्रव्यगुण विज्ञान – 10

कतिपय केश रंजक द्रव्यों का पालित्य रोग के परिप्रेक्ष्य में गुणकर्मात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. गिरधर गोपाल शर्मा

निर्देशक : वैद्य बनवारी लाल मिश्रा

सह–निर्देशक : डा. महेन्द्र कुमार शर्मा

वर्ष : 1997

वर्तमान में सौन्दर्य प्रसाधन युग में जहां अभी तक पालित्य का रासायनिक केश रंजकों द्वारा अस्थायी उपचार किया जा रहा है, वहीं यह अनुसंधान कर्ता के लिए ज्वलन्त समस्या बना हुआ है तथा वैज्ञानिकों का ध्यान वानस्पतिक केश रंजकों की तरफ आकृष्ट हुआ है । अतः आयुर्वेद के निघण्टु ग्रन्थों में वर्णित द्रव्यों में से कतिपय द्रव्यों को इस अध्ययन हेतु चयनित किया गया है ।

इस अध्ययन हेतु 30 आतुरों का चयन किया गया तथा उन्हें तीन वर्गों में विभाजित किया गया । प्रथम वर्ग में हेयर केयर वटी, द्वितीय वर्ग में केश रंजक योग तथा तृतीय वर्ग में उभय औषध (हेयर केयर वटी + केश रंजक योग) प्रयोगार्थ दी गई।

औषध योग–हेयर केयर वटी, घटक द्रव्य–तिल, आमलकी एवं भृंगराज–समान मात्रा में । केश रंजक योग, घटक द्रव्य–भृंगराज, नीलिनी पत्र, मदयन्तिका, कृष्ण तिल, आमलकी फल एवं लौह चूर्ण–समान मात्रा में । हेयर केयर वटी की 2–2 वटी (500 मि.ग्रा. प्रति वटी) दिन में तीन बार प्रथम 3 सप्ताह तक तत्पश्चात् दिन में दो बार दुग्ध अनुपान से तथा केश रंजक योग का बाह्य प्रयोग किया गया । औषध प्रयोग अवधि 90 दिन रखी गई ।

इस अध्ययन में प्रथम वर्ग में 27 प्रतिशत केश श्वेतता में लाभ पाया गया। द्वितीय वर्ग में 48 प्रतिशत आतुरों में केश श्वेतता में लाभ रहा । तृतीय वर्ग में 29 प्रतिशत आतुरों में केश श्वेतता में लाभ पाया गया । समग्र लक्षणों में इस औषध का 84 प्रतिशत लाभ रहा ।

Dravyaguna Vigyan - 11

A Clinical study of Sharapunkha with special reference to Diabetes Mellitus

Name	:	Dr. M. Indra Reddy
Guide	:	Dr. Shyam Sunder Sharma
Co-Guide	:	Dr. Mahendra Kumar Sharma
Year	:	1998

The object of this study was to assess the effect of Sharapunkha in Diabetes Mellitus.

For clinical study 16 patients (NIDDM) were selected. They were put in two groups. Group A - combination of drug and diet. Group B - drug only. Sharapunkha seeds powder administered in the dose of 6gm in divided doses twice in a day with water before half an hour of taking food. The trial was done for 2 months.

The progress was assessed by checking Urine, fasting and post prandial Blood sugar levels every 20^{th}, 40^{th}, 60^{th} day.

Symptomatic relief was observed.

Urine sugar level reduced to normal.

In Blood sugar level, when there is high blood sugar level drug is acting fast, later action is not so fast. No side effects and adverse reaction of the drug was noticed.

Dravyaguna Vigyan - 12

Evaluation of certain indegenous drugs to study of their Adulterant

Name	:	Dr. M.B. Guru Raja
Guide	:	Dr. Shyam Sunder Sharma
Year	:	1998

This study is aimed at the evaluation of certain indegenous drugs and their adultrants.

35 samples of 5 main drugs - small Pippali (Piper longum), big Pippali (Piper chaba), Pippali mool, Marich black, Marich white and 3 additional drugs - Twak (Cinnamomum zeylanicum), Manjistha (Rubia cordifolia), Gandhaprasarini (Paederia foetida) were collected from different market and cultivated source. They were subjected to various standard uniform procedures.

All laboratory investigations were done like - determination of foreign matter (organic & inorganic), water soluble extractive and alcohol soluble extractive of the drug, total ash of the drug, acid insoluble ash, water soluble ash of the drug and stomatal index of the leaves etc.

Common adulterant for Pippalimool is stem pieces of Piper longum. Common adulterant in the samples of Marich black are seeds of Papaya, fruits of Lantana camara and fruits of Vidang. Seed of Shigru (Sweta marich) can be accepted a substitute to Marich white owing to similar properties. Commonest adulterant of Twak are cortex & cortex portion of same bark, barks of some other species of cinnamon.

Adultrant of Manjistha was stem pieces of same plant instead of root. Gandhaprasarini should be used in fresh condition, should not be subjected to longer period of storage.

द्रव्यगुण विज्ञान – 13

अपामार्ग तण्डुल का क्षुधाह्रास के सन्दर्भ में गुणकर्मात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. गुजराज बैरवा

निर्देशक : प्रो. महेश चन्द्र शर्मा

वर्ष : 1999

अपामार्ग को ऐतिहासिक दृष्टि से क्षुधाभार, तृष्णाभार, अलक्ष्मीनाशक, औषधीश, अनपत्य नाशक आदि कर्म करने वाला बताया है । पुराणों में इसके द्वारा कृमिनाशनार्थ एवं शान्त्यर्थ हवन किए जाने का विधान है। संहिताकाल में अपामार्ग का प्रयोग क्वाथ, यवागू, लेप, चूर्ण, तण्डुल, क्षार, तैल आदि विभिन्न कल्पों के रूप में बाह्य व आभ्यन्तर प्रयोगार्थ किया गया है । संहिताओं में मुख्य रूप से चरकसंहिता में भस्मक रोग में इसका प्रयोग होने के कारण अध्येता द्वारा अध्ययन हेतु इस विषय का चयन किया गया है ।

इस अध्ययन हेतु 20 आतुरों का चयन किया गया । आतुरों को दो वर्गों में विभाजित किया गया । प्रथम वर्ग 'अ' में 15 मेदस्वी आतुरों का चयन किया गया तथा द्वितीय वर्ग 'ब' में 5 सामान्य आतुरों का चयन किया गया । वर्ग 'अ' में मेदस्वी आतुरों को अपामार्ग बीज चूर्ण का क्षीरपाक 30 ग्राम मात्रा में तथा वर्ग 'ब' के सामान्य आतुरों को अपामार्ग तण्डुल की खीर 3 ग्राम मात्रा में दी गई । प्रयोग अवधि 10 दिन रखी गई ।

इस अध्ययन में सभी आतुरों में अग्न्याधिक्य, स्वेद, गुरूता, व्यायाम सहत्व, क्षुधातिमात्र, मुखशोष आदि लक्षण विशेष रूप से थे ।

चिकित्सोपरान्त अग्न्याधिक्य में 75.75 प्रतिशत, क्षुधातिमात्र में 74.07 प्रतिशत, मुखशोष में 65 प्रतिशत लाभ रहा । अपामार्ग तण्डुल का लक्षणोपशमन 60.78 प्रतिशत रहा, जबकि सभी आतुरों की क्षुधा वृद्धि में कार्मुकता 66.60 प्रतिशत रही ।

द्रव्यगुण विज्ञान – 14

शुक्रशोधन महाकषाय की औषधियों का गुणकर्मात्मक अध्ययन युवान पिडिका के सम्बन्ध में

अध्येता : डा. संजीव कुमार लाले

निर्देशक : प्रो. महेश चन्द्र शर्मा

वर्ष : 2000

वर्तमान समय में जहाँ मनुष्य सौन्दर्य की ओर आकर्षित हो रहा है वहीं युवान पिडिका रोग व्यापक रूप से बढ़ता जा रहा है । इस रोग में युवा वर्ग को मानसिक तनाव से भी गुजरना पड़ रहा है । इस रोग का एक प्रमुख कारण अन्तःस्राव है। इसकी पुष्टि आचार्य शार्ङ्गधर के धातु मलों के वर्णन से होती है । इन्होने शुक्र धातु का मल मुख स्निग्धता एवं युवान पिडिका को माना है । युवान पिडिका के लिए उपद्रव रहित एवं सस्ती औषध उपलब्ध करवाने हेतु शुक्रशोधन महाकषाय में प्रयुक्त द्रव्यों का बहिःशुक्र एवं अन्तःशुक्र पर गुणकर्मात्मक अध्ययन महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

इस अध्ययन हेतु 16 आतुरों का चयन किया गया । चरकसंहिता सूत्रस्थान में वर्णित शुक्रशोधन महाकषाय में घटक द्रव्यों को समान मात्रा में लेकर पल्वराइजर में सूक्ष्म चूर्ण किया गया तथा इन्ही द्रव्यों के क्वाथ द्वारा, बनाए गए सूक्ष्म चूर्ण में 7 भावना देकर शुक्र शोधन महाकषाय योग का निर्माण किया गया । इस शुक्र शोधन महाकषाय योग के 500 मि.ग्रा. के एक–एक कैप्सूल को दिन में तीन बार जल के साथ 4 सप्ताह की अवधि तक सेवन कराया गया ।

इस अध्ययन में रोगियों के लक्षणों में निम्नानुसार लाभ प्राप्त हुआ –

पिडिका संख्या, पिडिका वेदना, पिडिका घनता व वक्त्र में क्रमशः लाभांश 81.57 प्रतिशत, 65.63 प्रतिशत, 62.86 प्रतिशत तथा 78.57 प्रतिशत रहा ।

Dravyaguna Vigyan - 15

Pharmacological study of Kustha w.s.r. to the Uterine Smooth Muscle

Name	:	Dr. Lungare Sanjay Narayanrao
Guide	:	Prof. M.C. Sharma
Year	:	2000

The object of this study was to find out the action of Kustha (Saussurea lappa C.B. Clarke) w.s.r. to the uterine smooth muscle (An experimental study).

Female wister rats of breeding age, weight approximately 20 gms, were used for experiment. Qualitative and quantitative experiments were done in vivo and in vitro.

Solution used : Solution of Saussurea lappa, solution of Propranolol hydrochloride, solution of Adrenaline and Oxytocin.

Solvents or Vehicles used : Dilute hydrochloric acid, dilute sodium hydroxide or 5% gum acacia suspension.

It was found that -

1. The alcoholic extract of Kustha showed relaxation of uterine smooth muscles, contractions were finally inhibited by the drug.
2. There was no alteration of relaxation caused by Saussurea lappa in the presence of Propanolol hydrochloride as per treatment.
3. Saussurea lappa antagonised spasmodic action of Acetylcholine and Histamin in the rats has been proved.
4. High Potassium depolarisation gave rise to fast phasic type contractions which were replaced by slow relaxation after addition of alcoholic extract of Saussurea lappa.

द्रव्यगुण विज्ञान – 16

मामज्जक एवं महानिम्ब का द्रव्यगुणात्मक अध्ययन मधुमेह रोग के परिप्रेक्ष्य में

अध्येता : डा. सुनीता डी. राम

निर्देशक : प्रो. महेश चन्द्र शर्मा

सह–निर्देशक : डा. ए.राममूर्ति

वर्ष : 2001

मधुमेह रोग की व्यापकता को देखते हुए इसकी प्रभावी औषध उपलब्ध कराने हेतु मामज्जक एवं महानिम्ब का इस अध्ययन के लिए चयन किया गया है ।

इस अध्ययन के लिए 30 आतुरों का चयन किया गया, जिन्हें औषधि के रूप में मामज्जक पंचाग चूर्ण व महानिम्ब मूल त्वक् चूर्ण समान मात्रा में 500 मि.ग्रा. को कैप्सूल में भरकर दिया गया । प्रत्येक आतुर को एक माह तक दिन में 3 बार एक–एक कैप्सूल का सेवन सुखोष्ण जल से कराया गया ।

औषध के सेवन से मधुमेह रोग के लक्षणों – प्रभूत मूत्रता, आविल मूत्रता, क्षुधाधिक्य, तृषाधिक्य, दौर्बल्य, दृष्टिमांद्य, विबन्ध, अधोशाखा वेदना व त्वक्विकार में क्रमशः 75.64%, 80.95%, 83.30%, 72.54%, 63.33%, 77.14%, 75% उपशमन पाया गया । सम्पूर्ण आतुर लाभांश 78.25% रहा ।

द्रव्यगुण विज्ञान – 17

बिल्वपर्णी का गुणकर्मात्मक अध्ययन अर्श के परिप्रेक्ष्य में

अध्येता : डा. चन्दन सिंह

निर्देशक : प्रो. महेश चन्द्र शर्मा

वर्ष : 2001

आयुर्वेद में अर्श रोग चिकित्सा के लिए अनेक औषधियों का उल्लेख है । बिल्वपर्णी भी उनमें से एक है । बिल्वपर्णी की अर्श रोग पर कार्मुकता का अध्ययन करना ही इस महानिबन्ध का उद्‌देश्य है ।

इस अध्ययन के लिए 20 रोगियों को बिल्वपर्णी चूर्ण 3–5 ग्राम की मात्रा में दिन में एक बार जल के साथ दिया गया । एक माह तक औषधि प्रयोग के बाद लक्षणों में उपशय का अध्ययन किया गया ।

बिल्वपर्णी चूर्ण के प्रयोग से अर्श रोग के लक्षणों – रक्तस्राव, शूल, दाह, विबन्ध, शोथ एवं कण्डू में क्रमशः 86.66%, 55.55%, 70.00%, 80.00%, 68.75%, एवं 64.28% लाभ पाया गया।

द्रव्यगुण विज्ञान – 18

शिलाजतु, कुटकी एवं खदिर का स्थौल्य के परिप्रेक्ष्य में गुणकर्मात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. भावना

निर्देशक : प्रो. महेश चन्द्र शर्मा

वर्ष : 2001

संहिताकाल से अद्यतन शिलाजतु, कुटकी तथा खदिर अपने गुणकर्मों के आधार पर चिकित्सा में प्रयुक्त होते रहे हैं तथा इन तीनों द्रव्यों का प्रयोग स्थौल्य रोग में बहुतायत से होता आया है । वर्तमान में स्थौल्य रोग जैसी कृच्छ्रसाध्य व्याधि के परिप्रेक्ष्य में इन तीनों औषधियों का अध्ययन ही इस शोध महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

इस अध्ययन के लिए 30 आतुरों का चयन कर तीन वर्ग बनाए गए । वर्ग 'अ' के रोगियों को शिलाजतु वटी 500 मि.ग्रा. मात्रा में प्रातः सायं, वर्ग 'ब' के रोगियों को खदिर त्वक् घन वटी 250 मि.ग्रा. मात्रा में प्रातः सायं तथा वर्ग 'स' के रोगियों को कुटकी वटी 1 ग्राम मात्रा में रात्रि में सेवन कराया गया । उक्त सभी औषधियों को उष्ण जल के अनुपान से तीन माह तक सेवन कराया गया।

वर्ग 'अ' के आतुरों के लक्षणों में कोई लाभ नहीं हुआ । वर्ग 'ब' के 10 आतुरों में 2 को अलाभ, 1 को अल्प लाभ, 2 को मध्यम लाभ तथा 5 को उत्तम लाभ रहा । वर्ग 'स' के 7 आतुरों में 3 को अलाभ, 2 को अल्प लाभ व 2 को मध्यम लाभ रहा ।

Dravyaguna Vigyan - 19

Pharmacological evaluation of Dugdhika (Euphorbia hirta) w.s.r. to COPD

Name	:	Dr. Vemula Sridhar
Guide	:	Prof. M.C. Sharma
Year	:	2002

The objectives of this study were to evaluate Dugdhika pharmacologically & to asses the effect of Dugdhika in COPD.

For this study 30 patients were selected & divided in 2 groups.

Group A & group B were administered Dugdhika 2 gm/day with water & palcebo respectively in random manner for 30 days & results were recorded.

Of 100% patients with dyspnoea 65.5% patients got relief; of 90% patients with cough 52% patients got relief; of 99.66% patients with wheez 63.33 % patients got relief, of 30% patients with fever 50% patients got relief, of 73.33% patients of coryza 52.38% patients got relief. Of 56.66% patients with chest pain 43.75% patients got relief. Of 83.33% patients with expectoration 38.09% patients got relief & of 83.33% patients with sleeplessness 59.09 patients got relief.

Dravyaguna Vigyan - 20

Pharmacological evaluation of naturally growing and cultivated Shveta Musali (Chlorophytum borivilianum Sant. and F.) used in I.S.M.

Name	:	Dr. Sudipta Kumar Rath
Guide	:	Prof. M.C. Sharma
Co.-Guide	:	Dr. M.S. Dashora
		Dr. A. Rama Murthy
Year	:	2002

This research was conducted to study pharmacological evaluation of naturally growing & cultivated Shveta Mushali (Chlorophytum borivilianum Sant. and F.)

30 volunteers were selected for clinical trial and divided into three groups. The first and second group were given capsules of naturally growing Shveta Mushali and cultivated Shveta Mushali respectively in the dose of 3 gm/day (3 cap. b.d.) with water for 30 days and the third group was treated with placebo.

In clinical trial Sweta Musali collected from naturally growing sources excreted a more pronouced effect on all pharmacological properties and action (an over all effect of 48.5% on clinical parameters and 14.78% on laboratory parameters) than the root tubers collected from cultivated sources (an over all effect of 35.06% on clinical parameters and 9.10% on laboratory parameters).

Dravyaguna Vigyan - 21

Pharmacognostic study of Parpata (Fumaria vaillantii) and Vrikshamla (Garcinia indica) collected from natural habitat and different market

Name	:	Dr. Archana P.M.
Guide	:	Prof. M.C. Sharma
Co.-Guide	:	Dr. Mita Kotecha
Year	:	2002

The objectives of this study were to asses the pharmacognostic and phytochemical characteristics of Parpata (Fumaria vaillantii) and Vrikshamla (Garcinia indica) collected from the natural habitat and to access the authenticity, purity and strength of the two crude drugs available in different markets of India.

The natural samples of these two drugs and market samples from four places : Jaipur, Amritsar, Kolkata and Trivendrum were collected and study was carried out under following points :

1. Organolaptic character
2. Microscopic study
3. Ash value
4. Extract value
5. Floresence analysis
6. TLC
7. Rf. value
8. Microbial analysis

The above study showed great variation of the characters and different phytochemical values of the drugs collected from different markets. Only very few characteristic and phytochemical values of some samples coincide with the standard one. The cause of these variation may be due to improper collection, storage and preservation or may be due to some other reasons. Also it has been found that some drugs of different botanical sources are sold as substitute in the name of original drugs in some markets.

Dravyaguna Vigyan - 22

Pharmacological study of cream based & curd based Go-Ghrita w.s.r. to Lipid profile

Name	:	Dr. Sharada Tak
Guide	:	Prof. M.C. Sharma
Year	:	2003

The objectives of this study were -

1. To asses the lipid metabolism by curd base Go-Ghrita.
2. To asses it's properties of agni vriddhi and to remove this controversy that use of Go-Ghrita may increase Lipid profile.

For this study 30 apparently healthy volunteers were selected & divided into 2 groups each of 15 volunteers. Group A was adminstered curd based Go-Ghrita and in Group B was administered cream based Go-Ghrita in an increasing dose of 10gm/day for 10 days, 20gm/day for 20 days & 30gm/day for 30 days.

The results observed in subjective parameters are highly significant in kshudha, pipasa, prabha, malpravriti & jaran shakti and insignificant in sharir bhar in group A where as in group B results are insignificant in pipasa, prabha, malpravriti & jaran shakti and only significant in kshudha & sharir bhar.

Results in objective parameters are highly significant in Cholesterol HDL & LDL and significant in Triglycerides & VLDL in group A, where in group B results are insignificant in only LDL.

This study interprets that serum lipid level of group A is less than group B and curd based Go-Ghrita does not make any hazard in Lipid profile.

Dravyaguna Vigyan - 23

Botanical discrimination of Kudhanya varga w.s.r. to Madhulika (Elevsine coracana) and its effect on Haemoglobin

Name : Dr. Swati Borker

Guide : Prof. M.C. Sharma

Year : 2003

The object of this study was to prove high nutritional value of Madhulika.

For this study 21 volunteers were selected and divided in 3 groups. The group treated with Madhulika biscuits was group A and given 30 biscuits per day for 30 days and group B was administered syrup Dexorange in the dose of 5 ml. per day for 30 days and group C was administered with placebo 250 mg arrowroot powder capsule for 30 days.

After clinical trial the conclusion revealed that group A showed higher significant result in subjective, objective and haematological parameters as compared to group B (significant result), while in group C insignificant result in all above parameters was noticed.

The trial drug has proved its efficacy to improve haemoglobin count in volunteers, thus it is safe and highly recommendable food.

Dravyaguna Vigyan - 24

Pharmacognostic evaluation of certain medicinal plant roots (Moolas)

Name	:	Dr. Kishor V. Dalvi
Guide	:	Dr. Naresh Khemani
Year	:	2003

This research was done to study the pharmacognostic evaluation of Dashmoola drugs.

These roots were identified on the grounds of size, shape, colour, surface, fracture, odour, taste, microscopic and organoleptic examinations.

The anatomical structure of their roots were studied microscopically. Every root has specific chemical structure which support to identification of root.

The physico-chemical and phytochemical analysis, total ash, acid insoluble ash, water insoluble ash, moisture value, TLC and Rf. value proved the authenticity and purity of Dashmoolas.

द्रव्यगुण विज्ञान – 25

सर्ज एवं शण का गुणकर्मात्मक अध्ययन मेदोहर प्रभाव के परिप्रेक्ष्य में

अध्येता : डा. ओम प्रकाश शर्मा

निर्देशक : डा. नरेश खेमानी

वर्ष : 2004

सर्ज एवं शण का मेदोरोग में गुणकर्मात्मक अध्ययन ही इस महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

इस अध्ययन हेतु 45 आतुरों का चयन किया गया, जिनको 3 वर्गों (अ, ब, स) में विभाजित किया गया । प्रत्येक वर्ग में आतुरों की संख्या 15–15 रखी गई । वर्ग 'अ' के सभी आतुरों को नियंत्रण समूह में रखा गया । वर्ग 'ब' के आतुरों को सर्जरस 1 ग्राम उष्णोदक के साथ दिन में 3 बार (प्रातः, दोपहर, सायं) दिया गया । वर्ग 'स' के आतुरों को शणबीज 1 ग्राम दिन में 3 बार उष्णोदक से दिया गया । औषधि प्रयोग अवधि 60 दिन रखी गई ।

वर्ग 'अ' के आतुरों के बीएमआई में लाभ का प्रतिशत 0.04, वर्ग 'ब' के आतुरों के बीएमआई में लाभ का प्रतिशत 4.08 तथा वर्ग 'स' के आतुरों के बीएमआई में लाभ का प्रतिशत 5.75 रहा ।

वर्ग 'अ' में औसत लाभ 15.97 प्रतिशत, वर्ग 'ब' में औसत लाभ 72.10 प्रतिशत तथा वर्ग 'स' में औसत लाभ 76.33 प्रतिशत रहा ।

द्रव्यगुण विज्ञान – 26

कतिपय चक्षुष्य द्रव्यों का गुणकर्मात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. विनोद कुमार शर्मा

निर्देशक : डा. नरेश खेमानी

वर्ष : 2004

कतिपय चक्षुष्य द्रव्यों का गुणकर्मात्मक अध्ययन करना ही इस महानिबन्ध का उद्देश्य है।

इस अध्ययन हेतु 80 आतुरों का चयन किया गया । समस्त आतुरों को 4 वर्गों (अ, ब, स एवं द) में विभाजित किया गया । वर्ग 'अ' के आतुरों में त्रिफला चूर्ण, वर्ग 'ब' के आतुरों में मधुयष्टी चूर्ण, वर्ग 'स' के आतुरों में निर्मली बीज चूर्ण तथा वर्ग 'द' के आतुरों में चावल के आटे से भरे हुए कैप्सूल का प्रयोग किया गया । त्रिफला चूर्ण एवं मधुयष्टी चूर्ण को रोगियों की प्रकृति, बल, आयु एवं अग्नि के अनुसार 2–3 ग्राम मात्रा में दिन में 2 बार प्रातः, सायं दिया गया । निर्मली बीज चूर्ण को 1–3 ग्राम की मात्रा में कैप्सूल में भरकर दिन में तीन बार दिया गया । चावल के आटे को 1–3 ग्राम की मात्रा में प्रातः, सायं दिया गया । त्रिफला चूर्ण को शहद 1 चम्मच एवं घी डेढ़ चम्मच अनुपान से दिया गया। मधुयष्टी चूर्ण का अनुपान दूध तथा निर्मली बीज चूर्ण एवं चावल के आटे को सामान्य जल के अनुपान से दिया गया । औषध प्रयोग अवधि 90 दिन रखी गई ।

इस अध्ययन में वर्ग 'अ' में 55.73% आतुरों को लाभ रहा । वर्ग 'ब' में 50.23% आतुरों को लाभ रहा । वर्ग 'स' में 44.37% आतुरों को लाभ रहा तथा वर्ग 'द' में 7. 74% आतुरों को लाभ प्राप्त हुआ ।

Dravyaguna Vigyan - 27

Pharmacognostic and Pharmacological evaluation of Veerataru (Dichrostachys cineria) w.s.r. to UTI

Name	:	Dr. A. Kavitha
Guide	:	Prof. M.C. Sharma
Year	:	2004

This research was done to study the pharmacognostic and the pharmacological evaluation of Veeratara w.s.r. to lower urinary tract infection.

For this study 30 patients were selected and divided in 2 groups A & B.

Group A was administered Veeratara kwath 30ml, thrice daily for 15 days and in group B was administered Norfloxacin 450mg, twice daily for 15 days. Symptoms and urine examination were taken into consideration for assesment of result.

There was 58.17% of relief in symptoms in group A and 68.32% relief in group B and both are statistically highly significant ($p<0.001$).

But the percentage of decrease in bacterial colony count in group A is 6.67% which is statistically insignificant and it is 60.0% in group B which is statistically highly significant.

द्रव्यगुण विज्ञान – 28

छिलहिण्ट का गुणकर्मात्मक अध्ययन वृष्य प्रभाव के संदर्भ में

अध्येता : डा. विजेन्द्र कुमार गुप्ता

निर्देशक : प्रो. महेश चन्द्र शर्मा

वर्ष : 2004

शारीरिक एवं मानसिक रोगों के जनक होने के कारण क्लैब्य या पौरुष शक्ति की कमी को दूर करने हेतु प्राचीन काल से अनेक अनुसंधान होते रहे हैं। इसी क्रम में क्लैब्य निराकरण हेतु नवीन द्रव्य छिलहिण्ट का गुणकर्मात्मक अध्ययन ही इस महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

इस अध्ययन हेतु 30 आतुरों का चयन किया गया तथा आतुरों के दो समूह बनाए गए – वर्ग 'अ' एवं वर्ग 'ब' । वर्ग 'अ' में 20 आतुर तथा वर्ग 'ब' में 10 आतुर रखे गए । वर्ग 'अ' के आतुरों में छिलहिण्ट पंचांग चूर्ण 5 ग्राम की मात्रा में दिन में 2 बार (प्रातः, सायं) सामान्य जल के अनुपान से 60 दिनों तक प्रयोग किया गया । वर्ग 'ब' के आतुरों को मुद्गपर्णी चूर्ण का सेवन कराया गया ।

वर्ग 'अ' के आतुरों में 62.35% लाभ रहा, जबकि वर्ग 'ब' में 17.17% आतुरों को लाभ हुआ ।

द्रव्यगुण विज्ञान – 29

तोदरी सुर्ख एवं तोदरी सफेद का तुलनात्मक अध्ययन वृष्य कर्म के परिप्रेक्ष्य में

अध्येता : डा. सतीश कुमार जैमिनी

निर्देशक : प्रो. महेश चन्द्र शर्मा

वर्ष : 2005

द्रव्यगुण विज्ञान के ग्रन्थों में आचार्य प्रियव्रत शर्मा द्वारा तोदरी का स्वतंत्र रूप से वृष्य कर्म के रूप में पहली बार निर्दिष्ट किया गया है । यूनानी द्रव्यगुणादर्श में तोदरी के शुक्रवर्धन कर्म का उल्लेख किया गया है। वर्तमान युग की विषम परिस्थितियों एवं क्लिष्ट जीवनचर्या के कारण शुक्राल्पता के रोगियों के लिए तोदरी कितनी हितकर औषधि सिद्ध होती है, इसी उद्देश्य से शोध हेतु इस द्रव्य का चयन किया गया है।

इस अध्ययन हेतु 30 आतुरों का चयन किया गया। औषधि के रूप में सुर्ख तोदरी चूर्ण 3 ग्राम मात्रा में दिन में दो बार जल या दूध के साथ एक माह की अवधि तक दिया गया ।

अध्येता को अपने शोध कार्य में तोदरी सफेद उपलब्ध नहीं हो सकी। अतः उस पर कार्य नहीं किया गया ।

औषधि सेवन के पश्चात् रोगियों के लक्षणों में निम्नानुसार लाभ प्राप्त हुआ– शुक्रतारल्यता, शीघ्रस्खलन, गुह्यांग वेदना, स्वप्नदोष, ध्वजोत्थान तथा मैथुनेच्छा में क्रमशः 34.18%, 25.97%, 36.35%, 37.50%, 21.71%, 26.78%।

द्रव्यगुण विज्ञान – 30

चित्रक मूल एवं आवर्तकी का तुलनात्मक एवं गुणकर्मात्मक अध्ययन प्रवाहिका रोग के परिप्रेक्ष्य में

अध्येता : डा. दारासिंह रोतवार

निर्देशक : डा. नरेश खेमानी

वर्ष : 2005

आधुनिक समय में भौतिकता का प्रादुर्भाव होने से आज का मनुष्य दिनचर्या, ऋतुचर्या, आहार–विहार, पर्यावरण तथा प्रकृति के नियम विरुद्ध कार्य करने से विभिन्न शारीरिक एवं मानसिक रोगों से ग्रसित होता जा रहा है। इनमें महास्रोतस् की व्याधियां प्रमुख हैं। इसी के अन्तर्गत जठराग्निमांद्य होकर प्रवाहिका रोग का प्रादुर्भाव होता है। अतः चित्रक मूल एवं आवर्तकी मूल का प्रवाहिका पर गुणकर्मात्मक अध्ययन करने हेतु महानिबन्ध के लिए विषय चयनित किया गया है।

इस अध्ययन हेतु 32 आतुरों का चयन किया गया, जिनको वर्ग 'अ' तथा वर्ग 'ब' में विभाजित किया गया । प्रत्येक वर्ग में आतुरों की संख्या 16 रखी गई । वर्ग 'अ' के आतुरों को चित्रक मूल चूर्ण 500–1000 मि.ग्रा. की मात्रा में भोजनोपरान्त सामान्य जल से प्रातः, सायं दिया गया । वर्ग 'ब' के आतुरों को आवर्तकी मूल चूर्ण 2–3 ग्राम मात्रा में दिन में दो बार सामान्य जल से दिया गया। औषधि प्रयोग अवधि 30 दिन रखी गई।

इस अध्ययन में प्रथम वर्ग 'अ' में प्रवाहिका के सभी लक्षणों पर चित्रक मूल के प्रयोग का लाभ 55.17% रहा । जबकि वर्ग 'ब' में आवर्तकी के प्रयोग का लाभ 46. 57% रहा। तुलनात्मक दृष्टि से चित्रक मूल, आवर्तकी से अधिक कार्यकारी औषधि है।

द्रव्यगुण विज्ञान – 31

आवर्तनी का गुणकर्मात्मक अध्ययन प्रवाहिका रोग के परिप्रेक्ष्य में

अध्येता : डा. गिर्राज उपाध्याय

निर्देशक : प्रो. महेश चन्द्र शर्मा

वर्ष : 2005

आम के कारण ही उत्पन्न होने वाली महास्रोतस् व्याधियों में प्रवाहिका प्रमुख व्याधि है। यह व्याधि समाज के प्रत्येक वर्ग में व्याप्त है। इसी व्यापकता को देखकर प्रवाहिका रोग पर सर्व सुलभ, अल्प व्यय साध्य आवर्तनी औषधि के गुणकर्मात्मक अध्ययन हेतु महानिबन्ध के लिए विषय चयनित किया गया है।

इस अध्ययन हेतु 20 आतुरों का चयन किया गया । औषधि के रूप में आवर्तनी फलचूर्ण को 3–6 ग्राम मात्रा में दिन में दो बार जल से सेवन कराया गया। सभी आतुरों को औषधि सेवन एक माह तक कराया गया ।

इस अध्ययन में 35 प्रतिशत आतुरों को उत्तम लाभ, 40 प्रतिशत आतुरों को मध्यम लाभ तथा 25 प्रतिशत को सामान्य लाभ प्राप्त हुआ ।

Dravyaguna Vigyan - 32

Pharmacological and Pharmacognostic evaluation of Gauryadi Yoga w.s.r. to Post Menopausal Syndrome

Name	:	Dr. Usha Koli
Guide	:	Prof. M.C. Sharma
Year	:	2005

The objectives of this study were to evaluate the effect of Gauryadi yoga in Post Menopausal Syndrome and to do the pharmacognostic study of Gauryadi yoga.

The contents of Gauryadi yoga are Haridra, Shatavari and Shankhpushpi all in equal parts.

For this study 30 patients were selected on the basis of menopause upto 60 yrs. and divided in 2 groups. Group 'A' consisted of 20 patients were administered with Gauryadi yoga churna 3 gm twice daily. Group 'B' consisted of 10 cases were administered with placebo 2 capsules (500 mg filled with arrowroot powder) twice daily. The trial was conducted for 3 months.

Clinical improvement was judged assessing the severity of symptoms before and after treatment. More than 70% results were noted in symptoms-like hot flushes, palpitation, lack of concentration, sleep disturbances, forgetfullness, joint pain, backache & dyspepsia, where as between 60-70% results were observed in headache, excessive sweating, depression, irritability, burning micturition, flatulance & constipation and more than 50% results were observed in sensation of pins and needles and noises in ear. Only 30-35% results were observed in symptoms like vaginal infection, dryness of vagina and skin. Gauryadi yoga significantly increased serum estradiol levels.

Dravyaguna Vigyan - 33

To evaluate the effect of Krishna Musali and Sweta Musali in Guru guna and Balya karma

Name	:	Dr. Debashish Panda
Guide	:	Prof. M.C. Sharma
Year	:	2005

The object of this study was to determination of comparative efficacy of the two varieties of Musali along with standard techniques for the assesment of Guru guna and Balya karma.

For this study 30 healthy volunteers were selected and divided in three groups. Dose selected was 4gm per day (4 tab. b.d.) with anupan of milk for a period of 60 days.

Group 'A' was administered with Krisna musali, group 'B' with Sweta musali and group 'C' was placebo group (Wheat powder in the dose of 4 gm per day).

The group fed with Sweta musali showed significant result in favour of guru, picchila and brimhana karma of the drug, compared to other group fed with Krisna musali, similarly the Sweta musali showed significant increase in semen volume and sperm count compared to the Krisna musali, the placebo group showed insignificant result.